Ilm

Where Knowledge Begins Within.

ISHITA DHAWAN

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Ishita Dhawan 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7542-396-6

Cover Design: Deepak Katheria
Typesetting: Manisha Rawat

First Edition: April 2026

Dedication

I always feared that a young writer won't give justice to such big words until I became an admirer of poetries. And it is when I turned into an adult, I've realised that our life is nothing less than a poetry weaving different stories of world.

This book is a way of letting my inner voice out to you and I hope you'll stumble across a story like this in any part of your life.

This book is dedicated to my two lucky charmers, my mom and dad for not giving up on me ever.

To the little Ishita,
We did it bud, let the story begin.

Preface

This book isn't like any other series of shayri, but a learning of paths, at different stages of life.

Each stage connects us to our soul as we wait for its response.

This book is an epitome of "zindagi ka silsila".

Contents

Qurbat (قربت) 1

Ranj (رنج) 10

Hayaat (حيات) 26

Wahdat (وحدت) 37

Musafirat (مسافرت) 42

Qurbat (قربت)

क्या यह जानता की एक एहसास है तू
दुनिया के लिए सादगी रखता मेरी मुस्कान का राज है तू
यह तारे ढूँढ उस चाँद को रहे
जिसका अंश तेरी आँखों का नूर है
सुबह की रोशनी सिमटने लगी
इस बिखरे से गुल की दास्ताँ है तू

वो कह गया था मुझसे कोई
लम्हे का हिसाब क्या रखते हो
हर सांस में सियाही बन खिले हो
मेरे वजूद की किताब क्या रखते हो

सुबह सा चेहरा उसका
खिलता है उन बारिश की बूँदो में
रात के चाँद सी सूरत मेरी
तारे की छाहो जैसा साथ ठहरा अपना
अक्सर मिला करते है
बस वक्त कम्बक्त साथ नहीं देता

खुद की तकलीफ़ करना छोड़ चुके है हम
लफ़्ज़ो से धमकाना भूल चुके है हम
अपनेपन से ज़्यादा अपने बन चुके है हम
इस आसमान के नीचे एक कहानी है
जो लिखी जा रही है मेरी तरफ़ से तेरे रास्तों तक
पहाड़ो के साये में जब ये बारिश तुझ तक पहुचे
इससे मेरे साथ की आस तू महसूस करना
बंध पलको तले तुम हरदम मुझको याद करना
आख़िर झूठी उम्मीद का सहारा लेना छोड़ चुके है हम
असलियत ये इश्क़ है और इसमें खो चुके है हम
अब वक्त बीतने की आस में तुम और मैं बेकरार है
हो सके तो इस रात की सुबह हो जाए

हैरत है की तेरे बिना ज़िन्दगी चलती है
तेरे आने पे ऐसा लगता है जैसे सब थम सा गया हो

तू पहाड़ो से नज़रे उठाके तो देख
मैंने आसमान तेरे कदमों के नीचे रख दिया

हवा रुख़ बदल रही है
क्या तुझे याद है वो शाम
आँसू मेरी पलको पर लेकिन दिल तेरा हल्का हुआ था
आधा अँधेरा पुकार रहा है मुझे
भले आवाज़ तुझ तक ना पहुचें
इस हवा को समझ यह ख़ुशबू अपने साथ की चल रही है

इस धुंध में भी अपना चेहरा याद रखने लगे है
तेरी आहटो से ऊपर तेरी रूहानियत में
हम खुदको खुद सा समझने लगे है

Ranj (رنج)

कदमों पर चलावट आज कम सी है
मानो भाग रहे हो दुनिया से , पहुँचने के लिए अपनों तक
अपनों से दूर अपनों की तलाश में
यू तो चौखट पर आज बेज़ुबान खड़े है
कह दो ना की याद किया करते है
लोगो से छुपाये दो आँसू हर मर्तबा गिरा करते है
यह नूर अपनों का कैसा , परायों का चेहरा तक भुला देता है
फ़रक जगह या घंटों का
तस्वीरो से जुड़ जाता है
बाहर आके देखा तो तारे ने यह पलट के जवाब दिया
तुम ना रहो मैं खड़ा हूँ आज भी वही
एक टुकड़ा अपने हाथ में रखे
जो हर दिन तुझे मुझसे जोड़ जाता है
मेरे बिखरे बाग में यह दो बूंद पानी दे जाता है

यह तकिया जो मेरे सिरहाने हर रात रख जाते हो
मेरे कर्म की तलवार से दर्द खाने पर भी
एक और दफ़ा आ सहला जाओ
अब वापिस बचपन में लौटना चाहता हूँ

खोज रहे थे वो आज़ादी
राह देखें हर दुपहरी
अब ख़ाली घर से कतराता हूँ मैं
इस छुपी में भी मुझे हर दफ़ा
तेरी ही आवाज़ सुनाई देती है

इंसानियत की उम्मीद मैंने भी आख़िर कब्रिस्तान में लगाई थी

की जब हलातो ने ख़ुद की अहेमियत याद दिलाई
तब चल दिए दुरसो की राह पर
क्योंकि तेरे साथ राह तो हमेशा अपनी ही बनाई है
हाँ डगमगाने के लिए पत्थर बहुत है
पर हाथ खुद का ही थाम चले थे हम
तू तो एक साथी बनकर आया था मुसाफ़िर तो मैं ही था
मंज़िल तुम्हें ना मालूम मंज़िल हमे ना मालूम
लेकिन सफ़र से मंज़िल बनाते चले थे हम
अब अकेले जो खड़े है इस रास्ते पर कौन चले , कौन फिरसे खोज करे खुद
को तो जैसे तुमने लेलिया
अब मंज़िल भी गैरों की भला कौन ढूँढे

जश्न है चारो तरफ़
रंगों से बेशुमार छलक रही है जीत
गैरो की तिजोरी जो खुली है
अब हम है तन्हा क्यों जब देखते आईना हर दिन है
रंग ढलने का वक्त आ चुका है जनाब
जो झूम रहे थे अब खामोश बैठे है
बनावटी तो जहाँ के लिए अंदर से तो सब ख़ाली है

मेरे कतरो का हिसाब लगाती है यह दुनिया
अपनी दहलीज़ पर खड़े
कहती है तू वो नहीं जो तू था
यह कतरे जो उनके हाथो में है
कभी दिल हुआ करता था मेरा

ज़िंदगी फिर चलती है
हम हवाओं में घुल से जाते है
कोई गाने की नई धुन बनती है
तो कहीं पुराने मुखड़े दो बूंद आँसू दे जाते है

कमजोर है कलम की पकड़ आज
घबराहट शायद अपने आप से है
लफ़्ज़ है या आख़िर दिल में छिपी हुई बात
कम्बक्त काग़ज़ पर बयान नहीं होते

दिल तो हमारा कबका बिक गया
कोई खरीदने जाये
तो एक कतरा हमारा भी लाना
अक्सर इस्तेमाल हुई चीज़ सस्ते में वापिस मिल जाती है

काश सीखा होता अपनापन ना अपनाना
खुद कांता सा बनने से पहले
काश सीखा होता आसानी से पराया करना

अरे यह नादान से यादें
सुकून वो पुराना सा
कहा ढूँढने निकली हो ?
मौहौलत है सिर्फ़ दो नींदो की
कहते है ज़िंदा रहने के लिए काफ़ी है
जब जीना चाहेंगे तब लगायेंगे सुकून की बाजी

दुनिया के मोह के सरताज है हम
क़ैद ख़ुद के ही पिंजरे में
ख्वाहिशों की दुनिया में आज़ाद है हम
तुम ढूँढ लाओ एक लकीर इस हाथ से जो मिट चुकी है
किसी घड़ी के काँटे से थोड़ा वक्त वापिस लौटा दो
अपना सा अपने आप को महसूस करना चाहते है हम

देखो जरा कभी दिल के अंदर
झाँक कर तो देखो
कहना क्या चाहती हो
क्या क्या कह जाती हो
जताती हो सब ठीक है पर अंदर ही अंदर खुद को सबसे दूर कर जाती हो
कुछ की जान बस्ती है तुम्हारे अंदर तो कुछ का पाल भर का साथ थी तुम
क्या कहा, जा रही हो?
पर तुम तो कभी किसी को नहीं जाने देती
है क्या तुम्हारे अंदर क्यों अंधेरों से खामोश हो तुम ?
पर जरा यह तो बताके जाओ
इतना टूटने के बाद भी इतनी नायाब कैसे हो तुम ?
हर दम हम दम रोज़ मुस्कुराती हो
जिसे मिलो उसे ख़ुश कर जाती हो
पल भर की मुलाक़ात में ही ज़िंदगी भर की याद दे जाती हूँ
कुछ लोगो को ख़ुद से ना मिलके भी अपना बना जाती हो ?
आख़िर तुम यह सब , कैसे , क्यों , और किसके लिए कर जाती हो?

यह यादें ही तो दिल पे दस्तक दे जाती है
इनके बिना कौन भला अपना?
बेगाने घर के दरवाज़े नहीं खोलते

Hayaat (حيات)

हर रात जब दुनिया से बचके आता हूँ
हमारे कमरे में खुदको नहीं
आईने में काला दाग दिखाई देता है
क्योंकि ख़ुद को तो मैंने खो दिया
अब अपनों के लिए ही अपना दिखाई देता हूँ
ग़ैर दस्तक देने के हक़दार नहीं

काग़ज़ सी मुस्कुराहट में
चाँद के साये में
झूम रही है रोशनी हर तरफ़
कह रही ह घर को घर समझ
अकेलेपन से सिर्फ़ वही परिंदे वाक़िफ़ है
जिसने पूरी दुनिया नापी पर घोंसले में आकर सुकून पाया है
वही सुकून जो वो परिंदा तुझमें ढूंढता है
तेरे लफ़्ज़ो से ज़िंदगी को महसूस करता है
इन तारो में ढूँढ फिर अपनों को
जिनकी आस तुझे हर पल रहती है
हर किसी के नसीब घर की छत नहीं
शायद एक पल तुझे वक्त से ज़्यादा
इस सुकून की अहमियत समझा जाये

कामयाब ने कर्म देखा
तो कमजोर ने क़द
तालिबान ने सरहद देखी
तो ज़िहादियो ने सर
जहाँ खुदा ने इंसानियत देखी
तब फ़क़ीर को चादर मिली

निकले आज हम उसी रहा से
जहाँ कदम पहला रखा था अरसो पहले
आज खामोश थी वो सीड़ियाँ
मानो उदास सा हो झूमता पेड़
खेत की जगह रेट सा सैलाब था
नए चेहरे बिना पहचान के
फिर भी ना जाने दिल क्यो एक आस लेके बैठा है
वो बातें भले दुहरा ना पायेंगे
लेकिन हर बार हर पाल याद आएगी
सोचता है तू मिल जाये फिर किसी कोने में
शायद ही यह सिलसिला ख़त्म हो
पुरानी इमारत होगी गैरों के लिए
मुझे आज भी यह घर घर ही लगता है

यू तो अपनों की महफ़िल में अपनों को अनजान पाया है हमने
खुदको खुद से जुदा समझा है हमने
रिश्ते का मोल नहीं प्यार की अहमियत को महसूस किया है हमने
शायद वक्त का कांटा ही एक खेल है
दुनिया का तजुर्बा है मगर क़िस्मत का रचाया पहली बार जाना है हमने

कुछ तो लोग कहेंगे
कहेंगे की तू है अलग , अलग रहने का हक़दार है
ना मानता तू किसी को अपना सा ना समझने के काबिल है
तेरे इन कपड़ो में दाग है छुपाये तूने,
तेरे दुख के घाव है कहीं पर
दिखता तू सबसे साफ़ लेकिन अंदर की माटी से हारा है तू
नज़रे नीची कर तू शरम से चल
दूर रख खुद को अच्छे भले इंसानों से
जूतो पर मेरी नज़र नहीं , राहा के कंकड़ से वाक़िफ़ हूँ मैं
जिस दिन आसमान तक आँखें उठी ,
उस दिन डगमगाने का डर भी नहीं
रेल के डिब्बे डिब्बे के किस्से है
कहीं भरा तो कहीं एक दम ख़ाली
कुछ मन से आज़ाद , कुछ औरो की ज़ुबान से क़ैद
तो डिब्बे के दरवाज़े पर ही सही
अकेले अपने सुकून में ही सही
छोड़ो यह बेकार की बातें कहीं बीत ना जाये यह रैना
कुछ तो लोग कहेंगे

कहने को तो ठंडक देता है ये
नर्म सी है पहचान इसकी
पानी बिन , खंडहर सा है ये
कहने को तो गुलमोहर में रहता है ये

सोचते तो बहुत है अक्सर फ़रमाते नहीं
बून्ते तो हरदम कोई ख़्वाब है
कम्बक्त अपनों से जताते नहीं

पलको पर सजी है तस्वीरें फिरसे
वो लम्हे धुंधला से गए है
एहसास तो मानो खो गया वक्त के साथ
पर ना जाने यह कौनसी वो कड़ियाँ है जोड़ा जिसने हमे इन यादों से है
कहने को तो एक अरसा होगया देखे हुए
पर असलियत में कल ही मिले थे हम तुम
एक आखरी दफा , खुद को खुद सा पाने
पलके ना उठ पायी ना लफ़्ज़ का कोई मोल रहा
बची तो सिर्फ़ एक हर्फ़
जिसके साथ एक उमर है जो इस ना होके भी
होने वाली बेसबरी के साथ काटनी है
शायद कुछ लम्हे इस धड़कन का हिसाब कर मेरे दिल को आज़ादी दे जाये

एक एक साँस का हिसाब है इस पहाड़ से
आख़िर रखी उसने दूर मेरे
ख़ुद के वजूद को है
अरसो से माँगी एक आरज़ू
यूह मानो है मेरे हाथ की लकीरो में
पर कहीं ना कहीं एक
कश्मकश सी है
अगर यह हाथ खुले और वक्त रेत की तरह निकल गया
फिर आयेंगे किसी रोज़ युही
पहाड़ो में ख़ुद को फिरसे खोजने

Wahdat (وحدت)

मैं खुद की पहली आवाज़ हूँ
मैं अपने अंशों का ख़्वाब हूँ
लाखों की दास्ताँ सी बन निकली हूँ
दरसल मैं एक गुलाब हूँ
पूरी दुनिया मेरी
पर इस जगह का ख़ुमार हूँ
दिखती एक सियाही जैसी
पर हर वक्त के काँटे का सबाब हूँ
दरसल मैं ही ग़ालिब और मैं ही गुलज़ार हूँ

खुलते आसमान का आज सितारा बन चला हूँ मैं
ख़ुद की दुनिया से आज आज़ाद हुआ हूँ
देख रही दुनिया ये कारवाँ
शुरू जो होने को है
साथ खड़े मेरे जो अपने , है मेरे ही ख़ातिर
पहाड़ो में हमे परिंदे की हँसी इस तपती धूप में साफ़ दिखाई दे रही है
जैसे कह रहे हो एक दूसरे से
जो आस थी दिल में , मिला रही है दास्तान हमे
भले तू थोड़ा दूर है पर तन्हा कहा है तू ?
मैं ना सही , तेरे सपने अब तेरे करीब है

मैं एक ख़ुमार हूँ
मिट्टी में पानी सा मानो तुम
मैं बारिश का निहार हूँ
तप से बिखरे दिनों में
खिल सा जाता है जो
मैं वही एक ख़्वाब हूँ

चल यह आखरी वादा रहा
तेरे दिन पर फिरसे हर मंदिर में
अब तेरी जगह तेरी खैर माँगूँगी

Musafirat (مسافرت)

यह जो शायद से वादे है
मन ही मन इश्क़ के धागे है
तू जानता है तू मुझ सा हो चुका है
मैं रहने की आस में हूँ
आज जब देखा एक दूसरे को
तो लगा जैसे फिरसे मिलेंगे
ए वक्त जब एक ख्वाहिश सी है
तू भले बदल जाये , यह साथ क़ायम रहे

चल माना वक्त जरा सा बेवफ़ा निकला
तू तो हमनवा था
तुझसे क्या ख़ता रखना
चल माना मेरी आस लिए हर शाम तू उस घड़ी के काँटे की ओर देखता था
मेरी ही बातें मुझसे सौ मर्तबा करता था , तुझसे क्या ही ख़ता रखना
चल माना इन दूरियों ने एक बेताबियों की दीवार खीची ,पर हर ईठ पे अक्ष
तेरा लिखवा लिया
आख़िर तुझसे क्या ख़ता रखना
चल माना तस्वीर हमारी यू जो लगाई थी , दुनिया की नफ़रत और नज़र का
तो ख्याल करता
यह दिखते कोई और इनकी ख़्वाहिश कुछ और
ज़रा इसका तो लिहाज़ रखता
तुझसे क्या ही ख़ता रखना
चल एक बार फिर माना , तू मेरा ना हो सका
पर उस रात मुझे ज़िंदगी देने वाला भी तू निकला
दिल मेरा जो ट्यून कभी लौटाया ही नहीं
तेरे साथ हूँ यह अब जताया ही नहीं
पर कहीं ना कहीं यह सोचती हूँ
तू कभी यह कह दे
की मेरे बिना तू जी ना सका
तुझसे क्या खता रखना
चल एक बार फिर इश्क़ को इबादत बनाया हमने
आखरी सा यह सच है
आख़िर होगए बेगाने फिरसे
किसी समुंदर के पास से क़िले की तरह
लोग रोज़ देखने आते है
पर कम्बक्त साथ कोई नहीं निभाता
माहिर है बेवफ़ाई दुनिया की
इबादत से यह इश्क़ का हम करे क्या
यहाँ प्यार की तुलना वक़्त से की जाती है

कुछ तो फ़र्ज़ होगी इस इबादत ए महफ़िल की
इल्म है तो यू उन लफ़्ज़ो के
कहते है दिवाली सब अच्छा कर जाती है

यह ख़ुशी भी आख़िर इस तामीर की देन है
जब जब फूरकत में खुदको पाया
तब तब एक अजीब सी नदामत महसूस हुई
आख़िर क़िस्मत में महव की यादें ही मिली
वरना दुआओं में आबाद थे हम

तुम शीशे यू खोलो घर के
दुपहर का तप रात का सुकून नहीं देता

चांदनी है आज चाँद बिन
आख़िर यह रात बड़ी नायाब है
हथेली पर ख़ुशबू उसकी जिसका दिल में मोल नहीं
दिल में धड़कन उस दगा देने वाले की
और मुस्कान साथ देने वाले की
यह भी कोई सिलसिला है?
चांद भी मानो कह रहा हो मुझसे
तारे किसी और के मस्तक पर लगाएं
बादल अपने अंदर समेटे
और बारिश की बूँदों में , सबका ही हूँ मैं
तू कहाँ ख़ुद का रह सकता है ?
बस एक ही हूँ मैं , ना दूसरा मेरे जैसा
यही बादस्तूर कह सकते है

जाने वाले को अलविदा कह देते है
मैंने तेरी कमी , खुद से बदली है

Ho sake,
Toh kahani yaad rakhna………